डा. राजीव कुमार,
इतिहास विभाग,
एच. डी. जैन कॉलेज, आरा

Topic - बिहार में मुगलों का योगदान : एक
विश्लेषणात्मक अध्ययन
Contribution of Mughals in Bihar :
An analytical study.

बिहार का मध्यकालीन इतिहास राजनीतिक, प्रशासनिक तथा सांस्कृतिक दृष्टि से अत्यंत महत्त्वपूर्ण रहा है। 16वीं शताब्दी के उत्तरार्ध से 18वीं शताब्दी तक Mughal Empire के अधीन बिहार एक प्रमुख सूबा (प्रांत) के रूप में विकसित हुआ। यद्यपि बिहार पहले अफगानों और दिल्ली सल्तनत के अधीन रहा था, परंतु मुगलों के शासन में यहाँ प्रशासनिक स्थिरता, राजस्व व्यवस्था का पुनर्गठन, शहरीकरण, व्यापारिक विस्तार तथा स्थापत्य और सांस्कृतिक विकास के नए आयाम दिखाई देते हैं।

नीचे बिहार में मुगलों के योगदान का क्रमबद्ध विश्लेषण प्रस्तुत है।

1. राजनीतिक और प्रशासनिक योगदान :

(क) सूबेदारी व्यवस्था का विकास -

Akbar ने अपने शासनकाल में प्रांतों को “सूबा” में विभाजित किया। बिहार को बंगाल से अलग एक स्वतंत्र प्रशासनिक इकाई के रूप में संगठित किया गया। सूबेदार, दीवान, बख्शी और काज़ी जैसे पदों की नियुक्ति कर प्रशासन को व्यवस्थित किया गया।
इस व्यवस्था से—
केंद्र और प्रांत के बीच संतुलन स्थापित हुआ।
कानून-व्यवस्था में स्थिरता आई।
स्थानीय सामंतों और जमींदारों पर नियंत्रण संभव हुआ।

(ख) मनसबदारी और जागीरदारी प्रणाली :

मुगलों ने मनसबदारी व्यवस्था लागू की, जिसके अंतर्गत सैन्य और प्रशासनिक अधिकारियों को मनसब (पद) दिया जाता था। बिहार में भी यह व्यवस्था प्रभावी रही। जागीरों के माध्यम से अधिकारियों को वेतन दिया जाता था। इससे एक संगठित नौकरशाही और सैन्य ढाँचा विकसित हुआ।

(ग) न्याय व्यवस्था :

मुगल काल में शरीयत और प्रथागत कानूनों के आधार पर न्याय प्रणाली संचालित होती थी। काज़ी और मुफ्ती न्यायिक अधिकारी होते थे। यद्यपि यह व्यवस्था पूर्णतः आधुनिक नहीं थी, फिर भी यह अफगान काल की अपेक्षा अधिक संगठित और संस्थागत थी।

2. राजस्व व्यवस्था में सुधार :

(क) टोडरमल की व्यवस्था -

Raja Todar Mal द्वारा विकसित दहसाला पद्धति का प्रभाव बिहार पर भी पड़ा। भूमि का सर्वेक्षण, माप और वर्गीकरण कर उपज के आधार पर कर निर्धारित किया गया।
इससे—
कर संग्रह में नियमितता आई।
राज्य की आय में वृद्धि हुई।
कृषि उत्पादन को प्रोत्साहन मिला।

(ख) कृषि विस्तार -

मुगल शासन में बिहार में धान, गेंहूँ, दालें तथा गन्ने की खेती का विस्तार हुआ। गंगा घाटी की उपजाऊ भूमि का अधिकतम उपयोग किया गया। नई नहरों और सिंचाई साधनों का विकास भी हुआ।

3. आर्थिक और व्यापारिक योगदान :

(क) पटना का व्यापारिक विकास -

मुगल काल में पटना (अजीमाबाद) एक प्रमुख व्यापारिक केंद्र के रूप में उभरा। Patna को अफीम, नमक, चीनी, रेशम और सूती वस्त्रों के व्यापार का केंद्र बनाया गया।
यूरोपीय व्यापारिक कंपनियाँ—विशेषकर English East India Company—ने भी पटना में अपने कारखाने स्थापित किए। इससे अंतरराष्ट्रीय व्यापार को बढ़ावा मिला।

(ख) शहरीकरण -

मुगल काल में पटना, मुंगेर, हाजीपुर और बिहार शरीफ जैसे नगरों का विकास हुआ। सड़कों, सरायों और पुलों का निर्माण हुआ, जिससे व्यापारिक आवागमन सुलभ हुआ।

4. स्थापत्य और सांस्कृतिक योगदान :

(क) स्थापत्य कला -

मुगल स्थापत्य का प्रभाव बिहार में भी देखा जा सकता है। मस्जिदों, मकबरों और किलों का निर्माण हुआ।
पटना और बिहार शरीफ में मुगल शैली की मस्जिदें बनीं।
मुंगेर किले का पुनर्निर्माण हुआ।
इन इमारतों में लाल पत्थर, संगमरमर तथा मेहराबों का प्रयोग प्रमुख था।

(ख) कला और साहित्य -

मुगल दरबार की सांस्कृतिक परंपरा का प्रभाव बिहार पर भी पड़ा। फ़ारसी भाषा प्रशासन और साहित्य की भाषा बनी। इतिहास लेखन, काव्य और सूफी साहित्य का विकास हुआ।
Aurangzeb के काल में पटना का नाम “अजीमाबाद” रखा गया, जिससे यह एक महत्वपूर्ण सांस्कृतिक केंद्र बना।

5. धार्मिक और सामाजिक प्रभाव :

मुगल काल में बिहार में धार्मिक सहिष्णुता का वातावरण अपेक्षाकृत बना रहा, विशेषकर Akbar के शासन में।
सूफी संतों की गतिविधियों में वृद्धि हुई।
हिंदू-मुस्लिम सांस्कृतिक समन्वय को प्रोत्साहन मिला।
स्थानीय रीति-रिवाजों और त्योहारों का सम्मान किया गया।
हालाँकि औरंगजेब के काल में कुछ कठोर नीतियाँ भी लागू हुईं, परंतु बिहार में बड़े पैमाने पर सांप्रदायिक संघर्ष के प्रमाण कम मिलते हैं।

6. सैन्य और सामरिक योगदान :

बिहार की भौगोलिक स्थिति—बंगाल और उत्तर भारत के बीच—सामरिक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण थी।
मुगलों ने यहाँ किलों और छावनियों को सुदृढ़ किया।
बंगाल पर नियंत्रण बनाए रखने के लिए बिहार को रणनीतिक केंद्र बनाया।
मुंगेर किला एक प्रमुख सैन्य अड्डा था, जिसने पूर्वी भारत में मुगल सत्ता को सुदृढ़ किया।

7. शिक्षा और बौद्धिक विकास :

मदरसे और मकतबों की स्थापना से इस्लामी शिक्षा का प्रसार हुआ। फ़ारसी और अरबी शिक्षा को प्रोत्साहन मिला। साथ ही, स्थानीय पंडितों और विद्वानों को भी संरक्षण मिला।
पटना में पुस्तकालयों और विद्वानों की उपस्थिति ने इसे बौद्धिक केंद्र के रूप में प्रतिष्ठित किया।

8. प्रशासनिक स्थिरता और दीर्घकालिक प्रभाव :

मुगल शासन ने बिहार में एक केंद्रीकृत प्रशासनिक ढाँचा स्थापित किया, जिसने बाद में ब्रिटिश शासन की प्रशासनिक संरचना के लिए आधार प्रदान किया।
भूमि सर्वेक्षण प्रणाली,
राजस्व रिकॉर्ड,
नौकरशाही संरचना,
इन सभी का प्रभाव औपनिवेशिक काल तक बना रहा।

समालोचनात्मक मूल्यांकन :

यद्यपि मुगलों ने बिहार में प्रशासनिक और आर्थिक स्थिरता स्थापित की, परंतु कुछ सीमाएँ भी थीं—
करों का भार कभी-कभी अत्यधिक हो जाता था।
जागीरदारी प्रणाली ने किसानों पर दबाव बढ़ाया।
18वीं शताब्दी में मुगल सत्ता के पतन से प्रशासनिक अव्यवस्था उत्पन्न हुई।
फिर भी, समग्र रूप से देखा जाए तो मुगल काल बिहार के इतिहास में राजनीतिक एकीकरण, आर्थिक समृद्धि और सांस्कृतिक विकास का काल माना जा सकता है।

निष्कर्ष :

बिहार में Mughal Empire का योगदान बहुआयामी था। प्रशासनिक सुधारों से लेकर राजस्व व्यवस्था, व्यापारिक विस्तार, स्थापत्य विकास और सांस्कृतिक समन्वय तक, मुगलों ने बिहार को एक संगठित और समृद्ध प्रांत के रूप में विकसित किया।
Akbar की उदार नीतियों, Raja Todar Mal की राजस्व प्रणाली तथा Aurangzeb के प्रशासनिक पुनर्गठन ने बिहार के ऐतिहासिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।
इस प्रकार, मुगल शासन बिहार के मध्यकालीन इतिहास का एक महत्वपूर्ण अध्याय है, जिसने राज्य की प्रशासनिक, आर्थिक और सांस्कृतिक संरचना को गहराई से प्रभावित किया और दीर्घकालिक ऐतिहासिक विरासत छोड़ी।